विद्यालय पत्रिका

VIDYALAYA PATRIKA

सत्र: 2022-23

SESSION: 2022-23

केंद्रीय विद्यालय

समूह केंद्र, के. रि. पु. बल., पिंजौर

KENDRIYA VIDYALAYA

G.C., C.R.P.F., PINJORE

www.crpfpinjore.kvs.ac.in

अनुक्रमणिका

क्रम सांख्य	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	संपादक मण्डल	1
2	अध्यक्ष संदेश	2
3	उपायुक्त संदेश	3
4	प्राचार्य संदेश	4
5	हिंदी विभाग(विद्यार्थी लेख)	5-13
6	शिक्षक विशेषांक	14-27
7	अंग्रेजी विभाग(विद्यार्थी लेख)	28-38
8	संस्कृत विभाग(विद्यार्थी लेख)	39-43
9	आईसीटी विशेषांक	44-46
10	गणित लेख	47-49
11	विद्यालय गतिविधि: एक झलक	50-51
12	स्टाफ फोटो एवं धन्यवाद	52-53

सम्पादक मण्डल

प्रमुख संरक्षक - श्री एस. एस. चौहान उपायुक्त, क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय विद्यालय संगठन गुरुग्राम संभाग

संरक्षक - श्री ललित कुमार (प्राचार्य , के. वि. के. रि. पु. बल., पिंजौर)

हिंदी विभाग - श्री सुनील कुमार मिश्र (मुख्य सम्पादक)

श्री त्रिभूषण (प्रशि. स्ना. शि. हिंदी)

अंग्रेजी विभाग - श्रीमती मेघा गर्ग (परास्नातक शि. अंग्रेजी)

श्रीमती मुक्ता शर्मा (प्रशि . स्ना. शि. अंग्रेजी)

संस्कृत विभाग - श्रीमती ममता ठाकुर (प्रशि. स्ना. शि. संस्कृत)

कंप्यूटर विभाग - श्रीमती रजनी अरोड़ा (परास्नातक. स्ना. शि. कंप्यूटर विज्ञान)

श्री रविकांत (कंप्यूटर अनुदेशक - सविदात्मक)

संदेश

मेरे लिए यह आपार हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र केरिपुबल, पिंजौर वर्ष 2022–23 हेतु अपने विद्यालय की ई–पत्रिका के वार्षिक अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के तत्वावधान में केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र पिंजौर की शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विरासत है, यह न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है बल्कि सकारात्मक, प्रगतिशील समान विचारधारा वाले लोगों को एकजुट होने और बनाने के लिए एक मंच भी तैयार करता है।

बच्चे भगवान की सभी अनूठी रचनाएँ हैं और केन्द्रीय विद्यालय उन्हें अपने व्यक्तित्व को बढ़ाने और उनकी आंतरिक शक्ति को मुक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करके उनकी विशिष्टता को बनाता है। जैसा कि डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा था, "मेरे पास भारत के लिए तीन दृष्टिकोण हैं, स्वतंत्रता, विकास और शक्ति। हमारे छात्र इन गुणों को सक्षम पेशेवर, जिम्मेदार नागरिक और भविष्य के विश्व नेता बनने के लिए स्कूल और प्रशिक्षण में बनाए गए अनुकूल वातावरण में आत्मसात करेंगे।"

पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित प्राचार्य, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अथक प्रयास हेतु बधाई देते हुए उनके सफल एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

नरेन्द्र पाल, (पुलिस उप महानिरीक्षक)
चेयरमैन, केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र, पिंजौर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan
संभागीय कार्यालय/REGIONAL OFFICE
के.वि. न.- कैम्पस, सैक्टर -14
KV No. 1 AFS Campus, Sector - 14
गुरुग्राम/Gurugram(Haryana) -12001
E-mail- kvdharampur@gmail.com

संदेश

तत्कर्म यन्न बंधाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरम कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम।।
- श्री विष्णुपुराण

अर्थात जो बंधन उत्पन्न न करे वही कर्म है जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करे वह विद्या है।
शेष कर्म परिश्रमरूप है तथा अन्य विद्यायें तो मात्र कला कौशल ही है।

भारतीय ऋषि-मुनियों व मनीषियों ने ज्ञान (विद्या) को मनुष्य की मुक्ति का साधन कहा है। मनुष्य को भय, भूख, दुर्विकार , दुष्प्रवृत्तियाँ, दुराचरण, निर्बलता, दीनता व हीनता, रोग, शोक इत्यादि से मुक्ति की अभिलाषा अनंतकाल से है। श्रीविष्णुपुराण का उपरोक्त महावाक्य यही संदेश देता है कि मनुष्य को ज्ञान के द्वारा अपने समस्त क्लेशों से मुक्ति पाने का पुरुषार्थ करना चाहिए । विद्या त्याग और तपस्या का सुफल होता है इसलिए ज्ञान की उपलब्धि सदैव श्रमसाध्य है।

आइये, हम सभी अनुशासित होकर, समर्पण भाव से समस्त उपलब्ध साधनों का मर्यादापूर्वक उपभोग करते हुए ज्ञानार्जन का सद्प्रयास करें। अपनी दिनचर्या में उचित आहार , विहार और विचार का समावेश करते हुए व्यक्ति के रूप में प्रकृति प्रदत्त अनंत संभावनाओं को ज्ञान की पवित्र ऊर्जा के आलोक में पल्लवित व पुष्पित करें।

PRINCIPAL'S MESSAGE

प्राचार्य सन्देश

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन |

रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें सिर ऊँचा मन ||

जिन्दगी खूबसूरत है... और इस ख़ूबसूरती का मूर्तरूप हैं ये नन्हे-मुन्ने बच्चे | खूबसूरत बच्चों की कोमल भावनाओं एवं उनकी तत्परता के फडफडाते पंखों को एक आसमान देने का प्रयास है यह विद्यालय पत्रिका |

शिक्षा के मूलभूत उद्देश्य "बच्चों का चहुँमुखी विकास" में विद्यालय-पत्रिका की विशेष भूमिका होती है | शैक्षिक उन्नति के साथ-साथ उनकी रचनात्मक ऊर्जा को एक नई पहचान मिलती है | उनके आतंरिक एवं मौलिक चिंतन को उनके लेखों के माध्यम से बढ़ावा मिलता है | मेरा पूर्ण विश्वास है कि ये नन्हे कलाकार भावी रचनाकार के रूप में राष्ट्रहित में अपना सहयोग देने में सफल होंगे |

पत्रिका प्रकाशन के सुअवसर पर मै केन्द्रीय विद्यालय संगठन गुरुग्राम संभाग के गर्व माननीय एस.एस. चौहान (उपायुक्त) एवं श्री नरेंद्र पाल (अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति एवं पुलिस उपमहानिरीक्षक) का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका सहयोग हमें नित नई ऊर्जा और स्फूर्ति प्रदान करता है तथा जिनके आशीर्वाद से पत्रिका का प्रकाशन कार्य सफल हुआ | पत्रिका प्रकाशन में दिए गए सहयोग के लिए मै विद्यालय परिवार के सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ |

शुभकामनाओं सहित ....

ललित कुमार

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय पिंजौर

हिंदी

विभाग

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा....

" मेरी प्यारी माँ "

माँ के होते कभी नही होती जीवन में कठिनाई है
माँ ताउम्र बनकर रहती अपनी औलाद की परछाई है
दिखता है जिसमे केवल स्नेह माँ तो वो नजर है
कभी नही मरती कोई भी माँ, वो तो परी अजर अमर है
लोक परलोक की, माँ ही होती है सबसे खूबसूरत आत्मा
माँ के कदमों में सदा झुका रहता है पूर्ण परमात्मा
माँ ही धरा पर जीवन लिखने वाली अनोखी कलम है
समझो औरत का जन्म ही धरा पर जीवन का जन्म है
माँ राहत, माँ चाहत, माँ पहचान, माँ ही सम्मान है
माँ जरूरत, माँ मूरत, माँ निदान, माँ ही अभिमान है
माँ जमीन पर रहकर जन्नत का अहसास दिलाती है
माँ छोटे परिंदों को हौसलों का बड़ा आकाश दिलाती है
माँ सितार, माँ बहार माँ ही देवों की अदभुत बोली है
माँ अधिकार, माँ प्यार, माँ कंगन, माँ ही चंदन रोली है
माँ सदा सुखों से कराती अपनी औलाद की मुलाकात है
पहुंचाती जो रूह को सकून माँ वो चांदनी रात है
जो महकाती सांसो को माँ की चाहत वो कस्तूरी है
जिस पर है सारी धरा आश्रित माँ ही वो धुरी है
माँ का प्रेम ही दुनिया का सबसे सुगंधित चन्दन है
तृषा की ओर से हर माँ को शत् शत् वन्दन है

तृषा
कक्षा:- दूसरी `ब `

"मेरा प्यारा शिक्षक"

गिरते है जब हम, तो उठाते है शिक्षक
जीवन की रह दिखाते है शिक्षक |
अँधेरे यहाँ पर बनकर दीपक,
जीवन को रोशन करते है शिक्षक |
कभी नन्ही आँखों मैं नमी जो होती,
तो अच्छे दोस्त बनकर हमे हसांते है शिक्षक |
झटकती है दुनिया हाथ कभी जब,
तो झटपट हाथ बढ़ाते है शिक्षक |
जीवन डगर है जीवन समर है
जीवन संघर्ष सिखाते है शिक्षक |
देकर अपनी ज्ञान की पूंजी,
हमे योग्य बनाते है शिक्षक |
इस देश और दुनिया के लिये,
एक अच्छा समाज बनाते है शिक्षक |
नहीं हो कहीं अशांति,
बस यही एक पैगाम फैलते है शिक्षक |
गिरते है जब हम, तो उठाते है शिक्षक ||

सुर्यांश मानू
कक्षा:- चौथी ब

"समय का महत्व"

- समय पृथ्वी पर सबसे कीमती वस्तु है, इसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है।
- इस संसार में सब कुछ समय पर निर्भर करता है, समय से पहले कुछ भी नहीं होता है।
- यदि हमारे पास समय नहीं है, तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।
- समय की बर्बादी हमें और हमारे भविष्य को बर्बाद करती है।
- यह समय ही है जो हमें सुख, समृद्धि और धन प्रदान करता है।
- हमें अपने समय का उपयोग कुछ उपयोगी कामों को करने में करना चाहिए ताकि, हमें समय समृद्धि दे, न कि कष्ट दे।
- जीवन और मृत्यु के बीच में अंतर के लिए केवल एक ही पल काफी होता है।
- इस संसार में सब कुछ समय के अनुसार बदलता है, क्योंकि समय से कुछ भी स्वतंत्र नहीं है।
- हमें कठिन परिश्रम करने का आनंद लेना चाहिए और कभी भी अपनी अच्छी आदतों के बाद में करने के लिए डालना नहीं चाहिए
- हमें समय के महत्व को समझ कर उसका रचनात्मक ढंग से प्रयोग करना चाहिए ताकि समय हमें समृद्ध करें ना कि नष्ट करें।

(तनिशा 11B)

सौर ऊर्जा

भारत एक तेजी से उभरने वाली अर्थव्यवस्था है, जिसमें 100 करोड़ से भी ज्यादा लोग शामिल है और जिन्हे ऊर्जा की बड़ी मात्रा में आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति भारत सरकार द्वारा विभिन्न नवीनीकरणीय और अनवीनीकरणीय संसाधनों का उपयोग करके की जा रही है। हमारा देश बिजली को उत्पन्न करने एवं उसकी खपत करने में विश्व में पांचवें स्थान पर है। हमारे देश में बिजली का उत्पादन हर साल बढ़ रहा है, पर हम इस बात से भी इनकार नहीं कर सकते कि जनसंख्या भी साथ में बढ़ रही है।

(करणबीर 11B)

"कोई अर्थ नहीं"

(राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर)

नित जीवन के संघर्षों से
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

जब फसल सूख कर जल के बिन
तिनका -तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

सम्बन्ध कोई भी हों लेकिन
यदि दुःख में साथ न दें अपना,
फिर सुख में उन सम्बन्धों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

छोटी-छोटी खुशियों के क्षण
निकले जाते हैं रोज़ जहाँ,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाये,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

सुख-साधन चाहे जितने हों

पर काया रोगों का घर हो,
फिर उन अनगिनत सुविधाओं का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

(Anmol 11B)

"पर्यावरण"

पर्यावरण का रखेंगे हम ध्यान |
अपने देश को बनाएंगे महान ||

पर्यावरण शब्द परि + आवरण से मिलकर बना है परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है घिरा हुआ। अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ । जैसे नदी ,पहाड़, तालाब, मैदान, पेड़-पौधे, जीव-जंतु वायु वन मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के घटक है। हम सभी इन घटको का दैनिक जीवन में भरपूर उपयोग करते है अर्थात हम इन घटको पर ही निर्भर है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए उठाए गए कदम

- प्लास्टिक बैग और उसके उत्पादों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाएं।
- कचरे को फैलने से रोकें और दूसरों को भी इसे रोकने के लिए प्रोत्साहित करें।
- रासायनिक उर्वरकों और किटनाशकों के उपयोग से बचें और जैविक पदार्थों का उपयोग करें।
- वाहनों से निकलने वाले घुएं को कम करैं, ये हमारे पर्यावरण को भारी नुकसान पहुचाते हैं।
- जंगलों को बचाएं और पेड़ लगाएं क्योंकि ये पर्यावरण के लिए फेफड़ों जैसा काम करते हैं।
- भूतल या सतह जल का उपयोग कम से कम करने का प्रयास करे।

(KRISHNA MALHOTRA 6A)

" स्वच्छता "

स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो हमें दबाव में करना चाहिए। यह एक अच्छी आदत और तरीका है। हमारे अच्छे और स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत भारत के 15 वें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को नई दिल्ली के वाल्मीकि बस्ती से की गयी। हमें स्वच्छता से कभी समझौता नहीं करना चाहिए यह जीवन में खाने व पानी की तरह ही आवश्यक है। स्वच्छ भारत अभियान भारत को गंदगी रहित बनाने को एक अच्छी कोशिश है जो राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में भारत सरकार द्वारा देश के 4041 संवैधानिक नगर की साफ-सफाई का लक्ष्य आरंभ किया गया।

(KARTIK 6TH A)

"कविता - स्वच्छ भारत अभियान"

उठा लो झाड़ू, उठा लो पोंछा
पहुँचो जहाँ कोई भी न पहुंचा
कोई जगह न रहने पाए
हर जगह को हम चमकाएं,
सपना यही है बस अपना
स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है।

(YASHVI TANWAR 6TH)

"माँ"

मां तो आखिर होती है मां।।
अपने सपनों को त्यागकर,
रातों को जागकर
हमारी ख्वाहिशें करती हैं पूरी
उनके बिना ज़िन्दगी अधूरी,
ममता मयी आंचल है जिनकी
जैसे गौरी और जानकी।
खुशियों की तो यह है मोती,
मां की आंखों में करुणा की ज्योति
रिश्तों को ये संजोए रखती,
सारे दर्द खुद ही सह लेती
अपनों पे जब संकट आती है
मौत से भी लड़ जाती है।
कभी दुर्गा कभी चंडी बन जाती,
जब बात अपने बच्चों पर आती है।
रब की परछाई होती है मां,
मां तो आखिर होती है मां ॥

(राधिका XI A)

"बचपन"

वो बचपन भी कितना सुहाना था
जिसका, हर रोज इक नया फसाना थ
कभी पापा के कंधो का
तो कभी माँ के आँचल का सहारा थ
कभी बेफिक्र होकर मिट्टी का खेल
तो कभी दोस्तों का साथ मस्ताना था
कभी नंगे पांवो का वो दौड़
तो कभी पतंग न पकड़ पाने का
पछताना था
कभी बिन आंसू रोने का
तो कभी बात मनवाने का बहाना था
सच कहूँ, तो वो दिन ही हसीन थे
न कुछ छुपाना और दिल में जो आये
बताना था

(JASHAN PREET KAUR 11C)

"शिक्षक"

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है।
सारा जहां शिक्षक के पीछे ही चलता है।
शिक्षक का बोया हुआ पेड़ बनता है।
वही पेड़ हजारों बीज जनता है।
शिक्षक काल की गति को मोड़ सकता है।
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है।
शिक्षक बिन अधूरी हूँ वसुन्धरा कहती है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था।
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।
संदीपनी से गुरु सदियों से होते आये है।
कृष्ण जैसे नन्हे नन्हे बीज बोते आये है।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम है
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक
राम बन जाते है।
शिक्षक की अनदेखी से वो रावण
भी कहलाते है।
आओ हम संकल्प करे की
अपना फ़र्ज निभायेगे।
शिक्षक का सम्मान करेंगे ,हम भी राम
कहलायेंगे।।

(JASHAN PREET KAUR 11C)

“पता ही नहीं चला”

कैसे कटा 21 से 60
तक का यह सफ़र,
पता ही नहीं चला ।

क्या पाया, क्या खोया,
क्यों खोया,
पता ही नहीं चला !

बीता बचपन,
गई जवानी
कब आया बुढ़ापा,
पता ही नहीं चला ।

कल बेटे थे,
कब ससुर हो गये,
पता ही नहीं चला !

कब पापा से
नानु बन गये,
पता ही नहीं चला ।

कोई कहता सठिया गये,
कोई कहता छा गये,
क्या सच है,
पता ही नहीं चला !

पहले माँ बाप की चली,
फिर बीवी की चली,
फिर चली बच्चों की,
अपनी कब चली,
पता ही नहीं चला !

बीवी कहती
अब तो समझ जाओ,
क्या समझूँ,
क्या न समझूँ,
न जाने क्यों,
पता ही नहीं चला !

दिल कहता जवान हूँ मैं,
उम्र कहती है नादान हूँ मैं,

इस चक्कर में कब
घुटनें घिस गये,
पता ही नहीं चला !

झड़ गये बाल,
लटक गये गाल,
लग गया चश्मा,
कब बदली यह सूरत
पता ही नहीं चला !

समय बदला,
मैं बदला
बदल गई
मित्र-मंडली भी
कितने छूट गये,
कितने रह गये मित्र,
पता ही नही चला

कल तक अठखेलियाँ
करते थे मित्रों के साथ,
कब सीनियर सिटिज़न
की लाइन में आ गये,
पता ही नहीं चला !

बहु, जमाईं, नाते, पोते,
खुशियाँ आई,
कब मुस्कुराई उदास
ज़िन्दगी,
पता ही नहीं चला ।

जी भर के जी ले प्यारे
फिर न कहना कि ..
"मुझे पता ही नहीं चला।

उन सभी को जिन्होंने अपने परिवार के लिए
21 से 60 वर्ष कमाने में व्यस्त रहे उनके लिए
समर्पित एक छोटी सी रचना .

(Kajal XB)

“भ्रष्टाचार”

मानव को मानव पर से विश्वास उठ गया हो जैसे

आपस के रिश्तो से प्रेम उठ गया हो जैसी

चारों तरफ वैचारिक अन्धकार फ़ैल गया है

हर कोई इस पर विचार कर रहा है

क्योंकि मानव ने सीखा है एक नया विचार भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार ... भ्रष्टाचार ....चारों तरफ है भ्रष्टाचार

सच्चाई का आधार लुप्त हो गया हो जैसे

झूठे और फ़रेबियो का जाल फ़ैल गया हो जैसे

मेहनत करने वाले कर रहे है हाहाकार

सच्चे लोगो का तो जैसे हुआ है बुरा हाल

क्योंकि मानव ने सीखा है एक नया विचार भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार ... भ्रष्टाचार ....चारों तरफ है भ्रष्टाचार

चकाचौंध की दुनिया आडम्बर भरा हो जैसे

शिष्टाचार की हमने तिलांजलि दे दी हो जैसे

सुनता था हमेशा वो अपने दिल की आवाज

परन्तु आजकल छेड़ा है नया साज

क्योंकि मानव ने सीखा है एक नया विचार भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार ... भ्रष्टाचार ....चारों तरफ है भ्रष्टाचार

(Kanika XB)

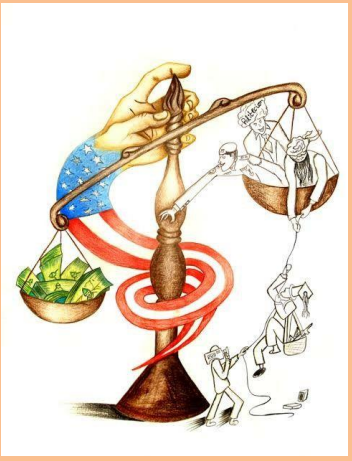

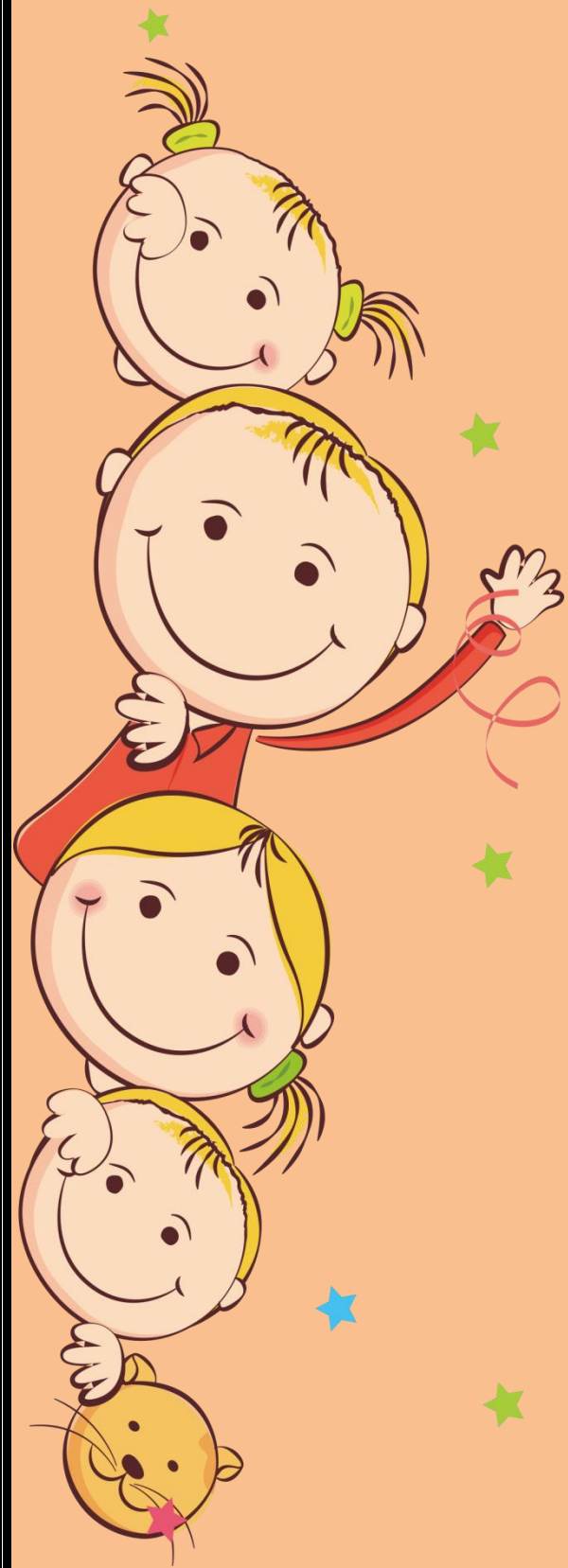

एक बचपन का जमाना था...

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था..

चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था..

खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था..

थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था...

माँ की कहानी थी,
परियों का फसाना था..

बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था..

हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था..

गम की जुबान ना होती थी,
ना जख्मों का पैमाना था..

रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था..

क्यों हो गये हम इतने बडे,
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था..

(Divy tyagi- XIA)

शिक्षक विशेषांक...

संविधान में राजभाषा हिंदी

राजभाषा का अर्थ है-संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा | 14 सितंबर 1949 ई. को भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गई | इसलिए हमलोग प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं भारतीय संविधान के भाग- 17 केअध्याय -11 की धारा 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान है | संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है,जो निम्नवत है: असमिया, बंगला, बोडो, डूंगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, हिंदी, तमिल, तेलुगू, उर्दू |

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी तथा भारतीय अंकों का रूप अंको का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा | किंतु संविधान में अनुमति प्रदान की गई कि 15 वर्षों की अवधि अर्थात 1965 ई. तक अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा |

अनुच्छेद 344 यह अनुच्छेद राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग एवं समिति के गठन से संबंधित है | राष्ट्रपति पांच वर्ष के बाद तथा उसके हर 10 वर्ष की समाप्ति पर राजभाषा आयोग का गठन करेगा | साथ ही आयोग से अपेक्षा की गई कि वह भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोकसेवाओं के संबंध में आहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के हितों का सम्यक ध्यान रखेगा |

अनुच्छेद 345, 346, 347 में प्रादेशिक भाषाओं संबंधी प्रावधान है |

अनुच्छेद 348 में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों, संसद और विधान मंडलों में प्रस्तुत विधेयकों की भाषा के संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला गया है |

अनुच्छेद 349 में भाषा से संबंधित विधियां अधिनियमित करने की प्रक्रिया का वर्णन है |

अनुच्छेद 350 में जनसाधारण की शिकायतें दूर करने के लिए आवेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा तथा प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा सुविधाएं देने और भाषाई अल्पसंख्यकों के बारे में दिशा निर्देशों का प्रावधान किया गया है |

अनुच्छेद 351 में सरकार के उन कर्तव्यों एवं दायित्वों का उल्लेख किया गया है, जिनका पालन हिंदी के प्रचार- प्रसार और विकास के लिए करना है |

"सारे विश्व में फैले हिंदी, यह हम सबका अरमान है |
सारी भाषाएं प्यारी हैं, पर हिंदी हमारा अभिमान है |"

ललित कुमार
प्राचार्य,
केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ, पिंजौर

निंदक नियरे राखिए(व्यंग्य लेख) .....

जो मुझको बदनाम करें हैं काश वे इतना सोंच सकें |

मेरा परदा खोले हैं या खुद का परदा खोले हैं ||

फिराक गोरखपुरी की ये पंक्तियाँ भले ही मुझे बारबार सीख देती हैं लेकिन परनिंदा -| का रस मुझे अपनी ओर खींचता ही जाता है क्योंकि निंदा में असीम आनंद मिलता है निंदक गाढ़े तारकोल से किसी | जीवन के सभी रस इसके समक्ष विरस मालुम होते हैं व्यक्ति की जितनी काली तस्वीर खींचता है | वह स्वयं उतना ही उज्ज्वल होता जाता है , आत्मीयता और निमग्नता ,निंदा की महिमा अपार है क्योंकि निंदकों की सी एकाग्रता पास रखने की -इसीलिए संतों ने निंदकों को आँगन कुटी छवाय | भक्तों में भी दुर्लभ है निंदा कुछ लोगों के लिए टॉनिक होती ह | सलाह दी हैंइसका एक उदाहरण .. वह कई दिनों से बीमार ..मेरे पड़ोस में एक बूढी काकी रहती थी..आपको बताता हूँ एक दिन अचानक उनसे किसी ने आकर कहा कि अमुक की ..उठा नहीं जाता था..थीं चार पड़ोसियों को अपने व्यक्तिगत कमेन्ट के -काकी उठी और दो..बस क्या था...घरवाली सीढ़ियों से गिर गयी साथ ये बात बता आयीं | उसी दिन से उनकी हालत सुधरने लगी |

कई बार निंदा ईर्ष्याद्विष से भी प्रेरित होती है लेकिन जो मजा एकसूत्रीय भाव से निंदा करने में है वो कहीं और - वह जलन के ,आप चैन से सोइए | वे खुद ही दण्डित हैं ,निंदकों को दण्ड देने की जरुरत नही | नहींकारण सो नही पायेगा | निंदा करके उसके अहम् को तुष्टि मिलती है | निंदा का उद्गम हीनता और कमजोरी से होता है | निंदक सामान्यता | त्यों निंदा की प्रवृत्ति में दिनोंदिन इजाफा होता जाता है– त्यों,ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है-ज्यों इसीलिए ,निठल्ले प्राणी होते हैं दूसरों के कर्मों से उन्हें चिढ़ होने लगती है मजेदार बात यह है कि निंदक को | | प्रमाणपत्र उनके पास प्रिंट रूप में होता है-लेकिन दूसरों का चरित्र ,अपने चरित्र को देखने की फुर्सत नही होती | बिनहीं कौड़ी बहै विचारा ,निंदक बाबा वीर हमारा -कवि दादू कहतें हैं

आपन डूबे और को तारे|| ऐसा प्रीतम पार उतारे ,

अर्थात निंदा करने वाले भाई के समान होते हैंजो कोई मूल्य लिए बिना हमारी कमियों की ओर ध्यान आकर्षित , लेकिन उनका नुकसान हो जाता है क्योंकि ,इन कमियों को सुधार लेने से हमारा तो भला हो जाता है | करते हैं उनका समय और विचार तो निंदा करने में ही बर्बाद होता रहता है हमारा ऐसा भला चाहने वाले लोगों को बुरा | | न समझकर अपना प्रिय समझना चाहिए

बुरा जो देखन मै चला| बुरा न मिलिया कोय ,

जो दिल खोजहूँ आपनो मुझसे बुरा न कोय ||

वास्तव में अगर हम दूसरों की कमियां ढूंढने की बजाय अपनी कमियों को खोजें तथा अपनी भावनावों के साथ दूसरों की भावनावों का भी सम्मान करें तो जीवन कितना सरल हो जाता हैनिंदा से ! लेकिन क्या करें साहब , ??.....कोई शब्द ही नही ,रसीला

.***आप भले तो जग भला***

सुनील कुमार मिश्र

स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक

केंद्रीय विद्यालय जी.सी.,सी.आर.पी.एफ, पिंजौर|

"राष्ट्रभाषा हिन्दी का अतीत से वर्तमान तक का सिंहावलोकन"

हिन्दी भाषा का अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है हिन्दी के विषय में जितना कहा जाए उतना ही कम है। हिन्दी जिस भाषा धारा के विशिष्ट दैनिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में उसका प्राचीनतम रूप संस्कृत है। विभिन्न उतार चढ़ाव झेलती हुई यह हिन्दी अपने विकास पर पहुंची है और अतीत से वर्तमान तक का सफर बड़े ही दुर्गम पड़ावों को पार करके प्राप्त किया है।

हिन्दी का विकास: → हिन्दी भाषा का विकास विभिन्न दुर्गम पड़ावों को पार करके अपने शैशवकाल से अपने विकास पर अग्रसर हुआ और अपने वर्चस्व को आज तक बचाए हुए है। हिन्दी का वास्तविक आरंभ १००० ई० से माना जाता है। हिन्दी के विकास का इतिहास आज तक कुल लगभग पौने दस सौ वर्षी (१००० - १९७५) में फैला है। भाषा की दृष्टि से इस पूरे समय को तीन कालों में बाँटा जा सकता है। जो इस प्रकार से है:-

1. आदिकाल (१०००-१५००) 2. मध्यकाल (१५००- १८००) 3.आधुनिक काल (१८०० से अबतक)

उपरोक्त काल विभाजन पर हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान, समालोचक आलोचक, निबन्धकार, साहित्यकार इस विभाजन से सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्होंने इस विभाजन को इस प्रकार से वर्णित किया है जो इस प्रकार से है:-

1. आदिकाल सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक
2. भक्तिकाल: - चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक
3. रीतिकाल: - सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक
4. आधुनिक काल: - उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक

(अ) पुनर्जागरणकाल (भारतेन्दु काल) - १८५७ - १९०० ई.

(ब) जागरण-सुधार काल (द्विवेदी काल)-१९००-१९१८ ई.

(स)छायावाद काल -१९१८ -१९३८ ई.

(द)छायावादोत्तर काल -

(क) प्रगतिकाल (प्रयोग काल) १९३८ से १९५३ई.

(ख) नवलेखन काल -१९५३ से अब तक

उपर्युक्त विभाजन हिन्दी साहित्य की सम्पूर्ण तस्वीर पेश करता है, फिर, भी हम कितना भी विभाजन अपने विचारों, अपनी इच्छाओं एवं अपनी ज्ञान गंगा के माधाम से करले लेकिन हिन्दी के विकास को अवरूद्ध नहीं किया जा सकता है।

हिन्दी हिन्द देश की भाषा,
हिन्दी जन- जन की भाषा

हिन्दी एक भाषा है, इसकी लिपि देवनागरी है। 'हिन्दी' हिन्दुस्तान की पहचान है। हिन्दी के अलावा भारत में असंख्य भाषाएँ बोली जाती हैं परन्तु हिन्दी इन सबमें विशिष्ट है। इस भाषा के माध्यम से पूरा भारत आपस में जुड़ा हुआ है। हिन्दी का जन्म ऐसे ही नहीं हुआ, यह विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती हुई, इस शिखर पर आसीन हुई है।

भारत में मुगलों का शासन आरंभ हुआ, तुम उन्होंने राज-काज की भाषा का सम्मान उर्दू-फारसी को दिया। इसके पश्चात अंग्रेजों का शासनकाल आरम्भ हुआ। उन्हें उर्दू- फारसी में राज-काज संभालने में असुविधा हुई। अत: उन्होंने राज- काज की भाषा अंग्रेजी को बना दिया। ऐसा इसलिए भी किया गया क्योंकि हर शासक अपनी बात को प्रजा पर थोपना चाहते थे। इस तरह प्रजा में सरलतापूर्वक हीनता उत्पन्न की जा सकती थी । देश विभिन्न जातियों और धर्मों में बंटा हुआ था। स्वतंत्रता सेनानियों को ऐसी भाषा की आवश्यकता हुई, जो उन्हें एकता के सूत्र में पिरो सके और जन-जन को भाषा बन जाए।

एक लम्बे अन्तराल के पश्चात भारत ने गुलामी की बेड़ियों को तोड़ते हुए स्वयं का स्वतंत्र अस्तित्व ढूंढा और आजाद देश बन गया। भारत को संविधान सभा ने हिन्दी को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया और 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को संघ को राजभाषा घोषित किया गया। 14 सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन प्रदर्शनी, मेले, गोष्ठी, सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाता है। भारतेन्दु हरिशचन्द, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, रामधारीसिंह दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, निराला जी, यशपाल जी और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रेम चंद जैसे लेखकों ने हिन्दी में महत्वपूर्ण रचनाओं द्वारा इस भाषा को अमर कर दिया है।

उपसंहार:- आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक हिन्दी भाषा ने जो दुर्गम पड़ाव झेले हैं उनके बारे में जितना कहा जाए उतना कम है। एक बात को कहने का सबका तरीका अलग होता है भाषा के बारे में कहा जा सकता है कि:- "परिष्कृत वाणी ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है।" भाषा की गहराई को जितना अधिक समझेंगे भाषा उतनी ही गहराई से सबको समान लेकर चलेगी' अन्त में यही कहा जा सकता है कि:- "शासक बदले, शासन बदला, भारत का नक्शा बदला है
सागर की चंचलता बदली, हिमगिर वहीं खड़ा है पक्षियों का कलरव बदला, सुर अपना यहाँ एक बना है बोली जाने वाली सब भाषाओं से, हिन्दी भाषा का मान बड़ा है" जय हिन्दी जय हिंदोस्तान

गीत:- अपने वतन के वास्ते जीवन लुटा देंगें

असहाय मजबूरों को जीवन में खुशी देंगे
रास्ते के पत्थरों को मेहनत से तराशेगे
मगर कभी वतन को झुकने नहीं देंगे
अपने वतन के वास्ते जीवन लुटा देंगे। 1।
कदम से कदम मिलाकर साथ हम देंगे
मेहनत करके जीवन को आसान बना देंगे
दुश्मन की चालों को अंजाम हम देंगे
अपने वतन के वास्ते जीवन लुटा देंगे।2।
जीवन के हर पल को हंसमुख बना देंगे
आपस में मिलजुल कर सब कष्ट मिटा देंगे
पर्वत की चोटी पर झंडा फहरा देंगे
अपने वतन के वास्ते जीवन लुटा देंगे। 3।

त्रिभूषण
प्रशिक्षत स्नातक शिक्षक हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय, समूह केन्द्र के. रि. पु. बल – पिंजौर (हरियाणा)

‘जीवन में जन्म से मृत्यु तक है संगीत’

संगीत का मानव जीवन में अहम स्थान है। यह हमारे साथ जन्म से लेकर मृत्यु तक रहता है। मानव के इतिहास में जब भाषा का जन्म नहीं था, तब लोग आपस में अपने भाव को आदान-प्रदान संगीत के माध्यम से करते थे। यह मानव जगत को ईश्वर का एक अनुपम दैवीय वरदान है। यदि हम ध्यान दें तो हमारे चारों ओर संगीत है, सिर्फ इसे महसूस करने की आवश्यकता है।

कहा जाता है कि ब्रह्मा ने जब धरती पर इंसानों के तरह-तरह के दुखों से परेशान देखा तो वेद और उसके चार उपवेदों-ऋग्वेद से पाठ्य, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गीत और अथर्ववेद से रस का संचयन कर पंचम वेद क रूप में नाट्य वेद की रचना की। लोग अपने कष्टों को भूल सके व उससे मुक्ति पा सके, इसके लिए ब्रह्मा ने इस अनुपम कला की रचना की।

संगीत का स्वास्थ्य पर प्रभाव:-

प्राचीन काल से अब तक भारतीय संगीत के इतिहास में ऐसे अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं, जिसके द्वारा संगीत के चिकित्सकीय प्रभाव को देखा व समझा जा सकता है। वर्तमान समय में संगीत एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो व्यक्ति को शारीरिक-मानसिक रोगों व व्याधियों से मुक्ति प्रदान करता है। संगीत की तीनों धाराएं(गायन, वादन व नृत्य) न केवल स्वर, ताल और लय की साधना है, बल्कि एक यौगिक किया है। इससे शरीर, मन और प्राण तीनों में शुद्धता और चैतन्यता आती है। जर्मनी के प्रो. माइकल स्कल्टे मार्कवर्ट के अनुसार संगीत बच्चों को शांत बनाने के अलावे उनमें बुद्धि का विकास करता है।

संगीत क्षेत्र में रोजगार:

कैरियर के नजरिए से संगीत का क्षेत्र असीम संभावनाओं से भरा है। देश में आये दिन बढ़ते चैनलों ने युवाओं के लिए संगीत के क्षेत्र में काफी संभावनाएं पैदा की है। लोगों में जहां एक ओर डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि बनने की ख्वाहिश रहती है, वहीं आज बदले परिवेश में गायक, वादक व नर्तक बनने की चाहत रखनेवालों की भी तादाद बढ़ी है। क्योंकि थोड़ी मेहनत व ढेर सारी शोहरत उन्हें रातों- रात मिल जाती है। संगीत की तालीम के लिए स्थानीय, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर कई संगीत विद्यालय व महाविद्यालय है। यहा से संगीत की शिक्षा प्राप्त कर अपने सपनों को साकार किया जा सकता है।

संगीत के नाम एक दिन:

विश्व में प्रचलित विभिन्न दिवसों में एक है संगीत दिवस में संगीत के नाम एक दिन है। प्रत्येक वर्ष 21 जून को विश्व संगीत दिवस मनाया जाता है। यह संगीतज्ञों व संगीत प्रेमियों के लिए बहुत ही खुशी की बात है। विश्व संगीत दिवस को 'फेटेडे ला म्यूजिक' के नाम से भी जाना जाता है। इसका अर्थ म्यूजिक फेस्टिवल है। इस त्योहार की शुरुआत 1982 में फ्रांस में हुई। इसको मनाने का उद्देश्य अलग-अलग तरीके से म्यूजिक को प्रोपोगैंडा तैयार करने के अलावे एक्सपर्ट व नए कलाकारों को एक मंच पर लाना है।

डॉ. रमेश कुमार
संगीताध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय जीसी सीआरपीएफ पिंजौर

‘आत्मविश्वास’

वर्तमान समय में अगर हमें कुछ पाना है, किसी भी क्षेत्र में कुछ करके दिखाना है, जीवन को खुशी से जीना है, तो इन सबके लिए आत्मविश्वास का होना परम आवश्यक है। आत्मविश्वास में वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम कुछ भी कर सकते है। आत्मविश्वास से हमारी संकल्प शक्ति बढ़ती है और संकल्प शक्ति से बढ़ती है हमारी आत्मिक शक्ति।

इमर्सन का कथन है- ''संसार के सारे युद्धों में इतने लोग नहीं हारते, जितने कि सिर्फ घबराहट से।' अतः अपने ऊपर विश्वास रखकर ही आप दुनिया में बड़े से बड़ा काम सहज ही कर सकते हैं और अपना जीवन सफल बना सकते हैं। मधुमक्खी कण-कण से ही शहद इकट्ठा करती है। उसे कहीं से इसका भंडार नहीं मिलता। उसके छत्ते में भरा शहद उसके आत्मविश्वास और कठिन परिश्रम का ही परिणाम है।

दुनिया में ईश्वर ने सभी को अनंत शक्तियां प्रदान की हैं। हर किसी में कोई न कोई खास बात होती है। बस, जरूरत है अपने अंदर की उस खास शक्ति को पहचानने की, उसे निखारने की। जो काम दूसरे लोग कर सकते हैं, वो काम आप क्यों नहीं कर सकते? अपने आप पर भरोसा कीजिए फिर दुनिया भी आप पर भरोसा करेगी।

महात्मा गांधी भी इस आत्मविश्वास के बल पर सत्य और अहिंसा के अस्त्र बनाकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अंततः वे भारत माता की दासता रूपी बेड़ी को काटने में सफल रहे। अब्राहम लिंकन ने अथक प्रयास कर दासों को मालिकों के शिकंजे से मुक्त कराया। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था कि मैंने अपने ईश्वर को वचन दिया है कि दासों की मुक्ति का कार्य अवश्य पूरा करूंगा।

इसी आत्मविश्वास ने कोलंबस को अमेरिका की खोज में सहयोग दिया था। नेपोलियन ने इसी शक्ति से ओतप्रोत होकर अपने सेनापति से कहा था कि यदि आल्पस पर्वत हमारा मार्ग रोकता है तो वह नहीं रहेगा और सचमुच उस विशाल पर्वत को काटकर रास्ता बना लिया गया।

आत्मविश्वास मनुष्य के अंदर ही समाहित होता है। आपको इसे कहीं और अन्य जगह से लाने की जरूरत नहीं है। यह आपके अंदर ही है, बस जरूरत है अपने अंदर की आंतरिक शक्तियों को इकट्ठा कर अपने आत्मविश्वास को मजबूत करने की।

श्रीमति कविता नेहरा
प्राथमिक अध्यापिका
केंद्रिय विद्यालय जीसी सीआरपीएफ पिंजोर

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तीकरण तब होता है जब महिलाओं को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता और विकल्प होता है। उनके लिए क्या सही है और क्या गलत, यह तय करने का उन्हें सबसे अधिक अधिकार है। महिलाओं ने दशकों तक पीड़ा झेली है क्योंकि उनके पास कोई अधिकार नहीं था। वे अपने पुरुष समकक्षों के हाथों पीड़ित हुईं। पिछली शताब्दियों में, उन्हें लगभग न के बराबर माना जाता था। जैसे कि सभी अधिकार पुरुषों के हैं, यहां तक कि मतदान जैसी बुनियादी चीज भी। जैसे-जैसे समय बदला, महिलाओं को अपनी ताकत का एहसास हुआ। वहीं से महिला सशक्तिकरण के लिए क्रांति शुरू हुई। चूंकि महिलाओं को उनके लिए निर्णय लेने की अनुमति नहीं थी, इसलिए महिला सशक्तिकरण ताजी हवा के झोंके की तरह आया। इसने उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया और यह भी बताया कि कैसे उन्हें एक आदमी पर निर्भर रहने के बजाय समाज में अपनी जगह बनानी चाहिए। इसने इस तथ्य को स्वीकार किया कि चीजें केवल किसी के लिंग के कारण उसके पक्ष में काम नहीं कर सकतीं। हालाँकि, हमें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है जब हम उन कारणों के बारे में बात करते हैं जिनकी हमें आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

लगभग हर देश, चाहे वह कितना भी प्रगतिशील क्यों न हो, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार का इतिहास रहा है। जबकि पश्चिमी देश अभी भी प्रगति कर रहे हैं, भारत जैसे तीसरी दुनिया के देश अभी भी महिला सशक्तिकरण में पीछे हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। उनका परिवार सोचता है कि अगर वे अपनी विरासत की प्रतिष्ठा को शर्मसार करते हैं तो उनकी जान लेना सही है।

इसके अलावा, यहां शिक्षा और स्वतंत्रता का परिदृश्य बहुत प्रतिगामी है। महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं है; उनकी शादी जल्दी हो जाती है। पुरुष अभी भी कुछ क्षेत्रों में महिलाओं पर हावी हो रहे हैं जैसे यह महिला का कर्तव्य है कि वह उसके लिए अंतहीन काम करे। न उन्हें बाहर जाने देते हैं और न ही किसी तरह की आजादी। इसके अलावा, भारत में घरेलू हिंसा एक बड़ी समस्या है। पुरुष अपनी पत्नियों की पिटाई करते हैं और उन्हें गाली देते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि महिलाएं उनकी संपत्ति हैं। इससे भी ज्यादा, क्योंकि महिलाएं बोलने से डरती हैं। इसी तरह, जो महिलाएं वास्तव में काम करती हैं उन्हें उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में कम वेतन मिलता है। किसी को उसके लिंग के कारण समान काम के लिए कम भुगतान करना सर्वथा अनुचित और लिंगभेदी है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि महिला सशक्तिकरण समय की आवश्यकता कैसे है। हमें इन महिलाओं को खुद के लिए बोलने और कभी भी अन्याय का शिकार न होने के लिए सशक्त बनाने की जरूरत है।

महिलाओं को कैसे सशक्त बनाया जाए ?

महिलाओं को सशक्त बनाने के कई तरीके हैं। ऐसा करने के लिए व्यक्तियों और सरकार दोनों को एक साथ आना होगा। लड़कियों के लिए शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए ताकि महिलाएं अनपढ़ होकर अपना जीवन यापन कर सकें। लैंगिक भेदभाव के बिना महिलाओं को हर क्षेत्र में समान अवसर दिए जाने चाहिए। साथ ही उन्हें समान वेतन भी दिया जाना चाहिए। बाल विवाह को समाप्त कर हम महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं। विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जहां उन्हें वित्तीय संकट का सामना करने की स्थिति में खुद का बचाव करने का कौशल सिखाया जा सके।

श्रीमति कविता रानी (प्रशिक्षत स्नातक अध्यापिका)

विद्यार्थी और फैशन

फैशन का अर्थ व कारण : शारीरिक प्रसाधनों से समाज के समक्ष आत्म-प्रदर्शन करना ही फैशन है। 'फैशन' शब्द का तात्पर्य शैली से भी है। आम व्यवहार में इसका अर्थ वस्त्र पहनने के तरीके से लिया जाता है। आज के दौर में फैशन नित नए रूप बदलता है।

फिल्मों की चमक-दमक और इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग से आज के विद्यार्थी फैशन की तरफ खींचे चले जाते हैं। वे अपने वस्त्रों व रहन-सहन से स्वयं को धनी दिखाना चाहते हैं। दूसरों की झूठी बड़ाई पाने के लिए वे अपने केश व वेश में परिवर्तन के लिए अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं जिससे वे पढ़ाई नहीं कर पाते। विद्यार्थी के लिए यह फैशन उसके भविष्य की उन्नति में बाधक है। घरवालों के लिए वे एक समस्या बनकर रह जाते हैं। अध्यापक उन्हें सिरदर्द समझते हैं। विद्यार्थी को चाहिए कि कृत्रिमता के वातावरण से दूर अपनी मौलिकता बनाए रखते हुए अपना जीवन जीएँ।

फैशन सामाजिक विकास का एक फल हैं। यह समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं। यह समय की जरूरतों तथा लोगों की पसन्द को दर्शाते हैं। लड़के तथा लड़कियां दोनों ही इसके पीछे पागल हैं। वे अपना अधिकतर समय तथा ताकत इस पर व्यर्थ करते हैं।हर विद्यार्थी स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और वस्त्रों की चमक-दमक में खो जाते हैं। विद्यार्थी का लक्ष्य विद्या प्राप्त करना होता है। यह कार्य तभी हो सकता है जब वह एकाग्र मन से अध्ययन करता है। यदि वे अपने इस कार्य को नहीं करता है तो विद्या उनसे रूठ जाएगी।

फैशन ऐसी जोंक है यदि इसे दूर न किया गया, तो यह युवा समाज का सारा खूनं-चूस जाएगी । इसके लिए अभिभावकों और शिक्षकों को युवा वर्ग के सामने आदर्श रखने चाहिए। गाँधी जी के सिद्धान्त 'सादा जीवन उच्च विचार' की शिक्षा देकर उन्हें प्रेरित करना चाहिए। इसके साथ ही युवा वर्ग को, उपयोगी कार्यों में लगाकर तथा उनका मनोवैज्ञानिक उपचार करा कर भी फैशन रूपी पिशाचिनी से पीछा छुड़ाया जा सकता है। फैशन का अंत ही जनहित है। अत: इस से मुक्ति दिलाने के यथाशीघ्र प्रयास किए जाने चाहिए ।

फैशन एक व्यर्थ की चीज़ है। यह केवल हमारी बाहरी सुंदरता को दर्शाती है। व्यक्ति की असल खूबसूरती उसके व्यक्तित्व में होती है। हमारे जीवन का उद्देश्य सादा जीवन तथा ऊँची सोच होना चाहिए।

श्रीमति रेणु

प्राथमिक शिक्षिका

केंद्रिय विद्यालय जीसी सीआरपीएफ पिंजोर

ब्लॉकचेन तकनीक: संभावना तलाशता भारत

ब्लॉकचेन तकनीक एक वितरित लेजर या खाता-बही तकनीक है जो सुरक्षित और पारदर्शी रिकॉर्ड-कीपिंग को सक्षम बनाती है, जहां डेटा को एक केंद्रीकृत प्रणाली के बजाय कंप्यूटर के नेटवर्क में संग्रहीत किया जाता है। हाल के वर्षों में, इसने वित्त, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और स्वास्थ्य सेवा सहित विभिन्न उद्योगों में लोकप्रियता हासिल की है। भारत, अपने बढ़ते तकनीकी उद्योग और जनसंख्या के साथ, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी से लाभान्वित होने की क्षमता रखता है।

ब्लॉकचैन प्रौद्योगिकी के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक इसकी सुरक्षित और पारदर्शी लेनदेन प्रदान करने की क्षमता है। भारत में डिजिटल भुगतान के उदय के साथ, ब्लॉकचेन तकनीक सुरक्षित और पारदर्शी लेनदेन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह लेन-देन का छेड़छाड़-विरोधी रिकॉर्ड प्रदान करके धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार को भी कम कर सकता है

ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी से ही बिटकॉइन नामक मुद्रा का संचालन होता है। यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो यह एक डिजिटल 'सार्वजानिक बही खाता' है, जिसमें प्रत्येक लेन-देन अथवा ट्रांजेक्शन का रिकॉर्ड दर्ज़ किया जाता है।

ब्लॉकचेन में एक बार किसी भी लेन-देन को दर्ज करने पर इसे न तो वहाँ से हटाया जा सकता है और न ही इसमें संशोधन किया जा सकता है।

भारत में ब्लॉकचेन तकनीक का एक अन्य संभावित उपयोग आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के क्षेत्र में है। एक बड़ी और विविध आबादी के साथ, भारत के पास एक जटिल आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क है। ब्लॉकचेन तकनीक कच्चे माल से तैयार उत्पाद तक उत्पादों को ट्रैक करने और आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है। यह अक्षमताओं को कम करने और समग्र आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क में सुधार करने में मदद कर सकता है।

शिक्षा में ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के प्राथमिक उपयोगों में से एक प्रमाण-पत्र सत्यापन है। ब्लॉकचैन के साथ, शैक्षणिक प्रमाण-पत्रों को छेड़छाड़-विरोधी तरीके से सत्यापित किया जा सकता है, जिससे तृतीय-पक्ष सत्यापन सेवाओं की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। यह अकादमिक रिकॉर्ड्स को सत्यापित करने से जुड़े समय और लागत को कम करने में मदद कर सकता है। साथ ही इस तकनीक का इस्तेमाल शैक्षणिक रिकॉर्ड को सुरक्षित रूप से स्टोर करने के लिए भी किया जा सकता है। ब्लॉकचैन का उपयोग करके, अकादमिक रिकॉर्ड को विकेंद्रीकृत और एन्क्रिप्टेड तरीके से संग्रहीत किया जा सकता है, जिससे वे अनधिकृत पहुंच और छेड़छाड़ के प्रतिरोधी बन जाते हैं।

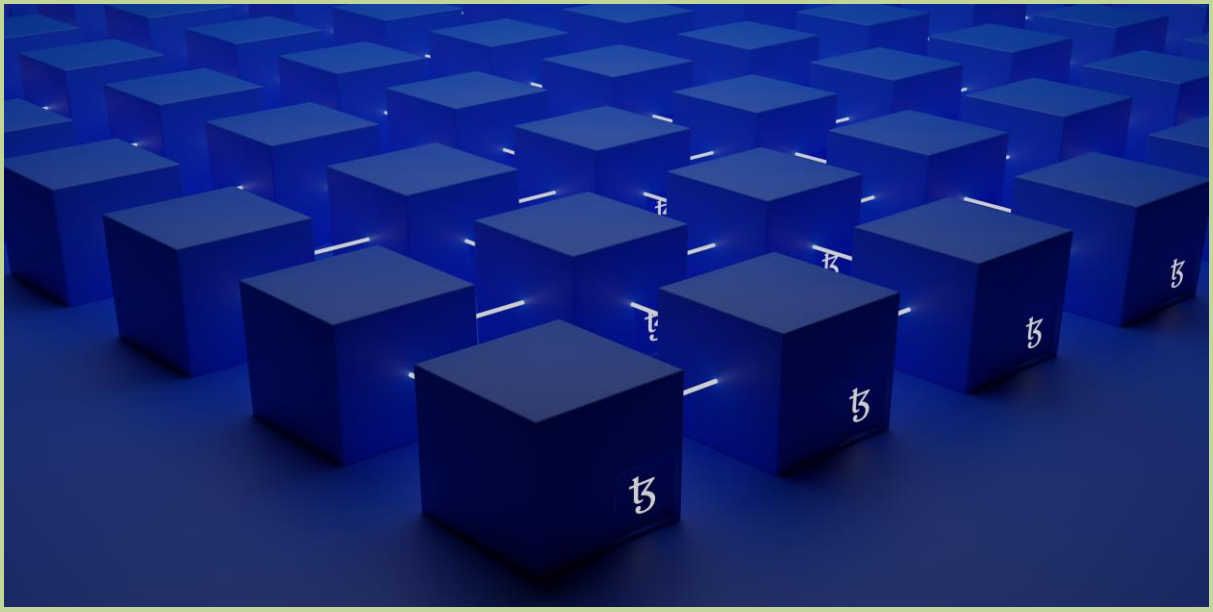

अंत में, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी में वित्त, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन शिक्षा, स्वास्थ्य और मतदान सहित भारत में विभिन्न क्षेत्रों की कार्यप्रणाली को बदलने की क्षमता है। सुरक्षित और पारदर्शी लेन-देन प्रदान करने की इसकी क्षमता धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार को कम करने में मदद कर सकती है, जबकि आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और मतदान में इसके संभावित उपयोग से दक्षता और पारदर्शिता में सुधार हो सकता है। जैसे-जैसे ब्लॉकचेन तकनीक विकसित होती जा रही है, भारतीय अर्थव्यवस्था में इसके महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपार संभावना है।

श्री मोहन सिंह

प्राथमिक शिक्षिका

केंद्रिय विद्यालय जीसी सीआरपीएफ पिंजोर

केंद्रीय विद्यालय सी.आर.पी.एफ, पिंजौर
हिंदी गतिविधियों की झलक 2022-23

राष्ट्रीय एकता पर्व

पराक्रम दिवस

KV GC CRPF PINJORE
ESSAY WRITING

शौर्य दिवस प्रतियोगिता/समारोह
केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ
पिंजौर 01-04-2023

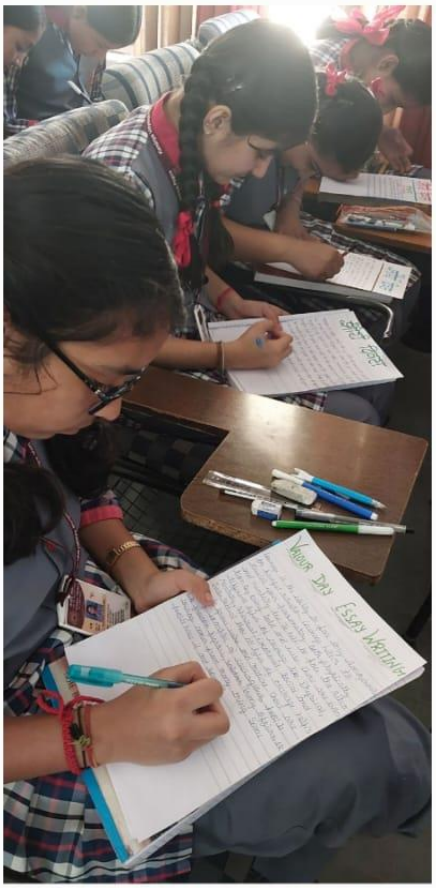

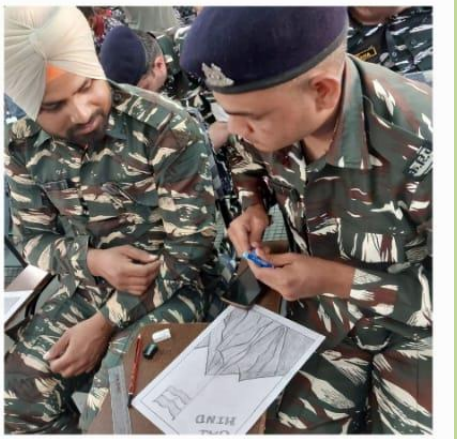

ENGLISH

SECTION

SCHOOL LIFE

Sitting in the back
Of our English class
Anxiously waiting
For the bell to pass

Running for our lives
Like never before
Just a minute late
The teacher shuts the door

Being a diligent scholar
Is a tough task
"What shall we do?"
We always ask

Teenager's minds played by confusion
Confusion plays out frustration
Which will conclude with explosions

(HARSH 11C)

SCHOOL RULES FOR STUDENT

1. Respect your teachers. Obey them and accept their punishments.
2. Do not fight with your classmates. Love and help each other.
3. Never make noises or disturb your classmates as they work
4. Keep silence during class. Do not talk unless it is absolutely necessary.
5. Do not leave your seat without permission.
6. At the end of class wash your hands and face.
7. Go quietly in and out of the classroom.

(JASHAN PREET KAUR 11C)

EDUCATION

Education is a fundamental asset for humans. It allows an individual to explore the world through their knowledge. They need the knowledge to stay updated on the current affairs in society. It is the primary factor that empowers an individual to fight the challenges. It plays a vital role in the development of nation. A nation is an amalgamation of different societies. The behavioural responses of individual societies reflect the overall growth and development of the nation.

(LOVEPREET KAUR 11C)

HOW TO PREVENT AIR POLLUTION

To prevent pollution from these sources, the MPCA provides education, guidance, and incentives for reducing air pollution. We have programs for businesses, cities, NGOs, and communities that address a range of environmental problems, including air quality.

Drive your car less. Vehicle exhaust is a major source of air pollution in Minnesota, Carpool, Bike, Bus, Telecommute, Electric vehicles. How could you burn less fuel?

Keep your car in good repair. Fix exhaust and oxygen sensor problems ASAP. Check your tyre pressure monthly; under-inflated tyres have been shown to lower gas mileage, particularly at lower speed.

Turn off your engine. An idling engine creates a hot spot of pollution. Buses and big trucks produce particularly unhealthy exhaust. Parents and teachers can help their schools and day cares develop and implement no-idling policies.

(Vandita - 6B)

TREES: LUNGS OF THE EARTH

Trees are truly speaking the lifeline of the Earth. Life would not exist on this planet if there were no trees. There are myriads of ways in which trees help to sustain life in all its diversity and richness. Some of these are obvious to the casual observer as trees supply us with timber, fruits, resins, oils, fodder and medicines. They also provide an ecosystem to sustain animal life by giving them shelter and food. More importantly trees play a vital role in purifying the air that we breathe by absorbing carbon dioxide and releasing oxygen into the atmosphere. Due to the phenomenon of transpiration trees are an integral part of the water cycle which nurtures life. The roots of the trees help to absorb rainwater and thus replenish the groundwater level. The organic matter from dead and decaying parts of a tree enrich the soil with essential nutrients and restore its fertility. The roots also prevent soil erosion and by acting as natural barriers prevent rapid run off of rainwater, thus preventing flash floods. By acting as a heat sink they prevent global warming and have a balancing effect on the climate.

It is therefore essential that we make all out efforts to preserve and enhance our forest cover if we want to preserve the rich biodiversity of our beautiful planet.

We should take an oath that not only shall prevent cutting of trees but should make an effort to plant at least 10 trees during our lifetime.

Harman (IX-A)

SAVE WATER

Earth is the only known planet in this universe where life is possible only because of availability of water and oxygen. Water is the most important necessity of life for all the living beings on the earth. Without water no one can exist even for a day we also know that a very low percentage of clean water means drinking water on the earth. So we should not waste clean water and save it for future generations. We should change our bad habits into positive ones and spread awareness among people about the importance of clean water. We should promote less use and saving of clean water to maintain the continuity of life on the earth. We should understand the importance of water in our life and stop misusing it with the proper management of water uses. We should also protect clean water from becoming dirty due to soil or water pollution. We should not waste it in the toilet and store rainwater for this purpose.

(Anmol – 6B)

OUR MOTHERLAND

The land of diversity,
Where people live in harmony.
Different cultures and customs,
And different castes and religions
Our history today tells us all,
About great leaders and
freedom fighters' sacrifice,
Who all were very wise.
Our country was protected,
Because they protested.
The Himalayas have worn a crown,
Giving birth to some of the greatest rivers,
The atmosphere here is filled with serenity,
Creating a nature that is very pretty!

(LOVEPREET KAUR CLASS 11C)

VALUE YOURSELF

A speaker started off his seminar by showing a $20 to the public. He asked the people "who wants this?" There was no surprise to see that all of them lifted their hands. He offered to give the money to one of them but insisted that he will do something to it. He crumpled the paper money and showed it again to the crowd and repeated the question. Still, everyone raised the hands. He then put the money into the ground and stepped on it and then raised it again and offered it to the public.

The people gathered there still showed interest to take that money despite seeing how dirty the note was. He told the public" No matter what I did to this money, you all still wanted this.

You all went in favour of my offer just because the value of the money never decreased despite what all I did to it. Similarly, value yourself despite the painful conditions or failures"

Moral: Believe in yourself and work hard to achieve success. Value yourself irrespective of the failures or obstacles and don't degrade yourself just because of the temporary setbacks.

(Payal-XI A)

PROGRESS IS STILL A PROGRESS NO MATTER HOW SLOW

It's not easy to get going. You will be discouraged. You will be tempted to quit but remember, it has to start small & slow. It needs time and room to grow. It needs your full attention and commitment. It requires the best of you, right now. When progress feels slow remember that quitting won't get you closer. So be encouraged. Never quit. Never settle. Learn to appreciate where you are right now. It's not easy but look at you, now. You have learned and progressed. Now believe in yourself a lot more and remember - do not despise these small beginnings. It's all start there. You will see best things ahead. You got this.

VANSHIKA-XIA

You get dignity,
When you stop thinking wrong
When you do what you learn right
You can live dignified,
When you live a lifestyle that,
matches your vision.
You can get dignity,
when you renounce the “ego of individuality”.
and rejoice ups and downs of life.
There is dignity,
when you have good thoughts,
in your heart and mind.

(JITEN THAKUR – XIA)

THOUGHT

“The intelligent use of Science and Technology are the Tools with Which to achieve a new direction.”

Niharika - XIA

TENSION

The moment you are in TENSION.

You will lose your ATTENTION.

Then you are in total CONFUSION.

And you will feel IRRITATION.

Then you will spoil personal RELATION.

Ultimately, you won't get CO-OPERATION.

Then things will end in COMPLICATION.

Then your blood pressure may also rise-

CAUTION!

And you have to take MEDICATION.

Instead, understand the SITUATION.

And try to think about the SOLUTION.

Many problems will be solved by DISCUSSION.

This will work better in your PROFESSION.

Don't think it is my free SUGGESTION.

It is only for your PREVENTION.

If you understand my INTENTION

You will never again experience TENSION.

(Priya Kumari- XIA)

THINK POSITIVE

"If you think you are beaten, you are
If you think you dare not, you don't,
If you like to win, but you think you can't
It is almost certain you won't.

If you think you'll lose, you're lost
For out of the world we find,
Success begins with a fellow's will
It's all in the state of mind.

If you think you are outclassed, you are
You've got to think high to rise,
You've got to be sure of yourself before
You can ever win a prize.

Life's battles don't always go
To the stronger or faster man,
But soon or late the man who wins
Is the man "WHO THINKS HE CAN!"

RADHIKA-XIA

AMAZING FACTS ABOUT ANIMALS

- Fleas can jump 350 times its body length.
- Humming birds are only birds that can fly backwards.
- Star fish do not have brain.
- Only female mosquitoes bite.
- Some dogs have such good noses that they can sniff out medical problems.
- Cats can jump up to 6 times their height.
- There are total 500 million pet cats in the world.
- Octopus's have about three hearts in its body.
- There are 32 brains in leech.
- Octopuses have no backbone.
- Birds don't have teeth.

AKSHIT-VII A

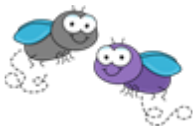

WATER CONSERVATION

We know how water an essential on which the entire human race depends on is becoming scare. There are lakhs of people in India who are already facing the brunt of irregular water supply or living without clean drinking water. As a result, citizens are getting affected by water borne diseases.

Around 71 percent of the earth's surface is covered by water out of which ,97 percent is the saline water of oceans and seas which is unfit for drinking. The remaining 3 percent of drinking water comes from streams, ponds, lakes and rivers. Rapid urbanization, irregular monsoons, expeditious use of groundwater has further pushed the country into a dire strait and the day is not far enough for another country or major city to become the next Cape Town.

As a citizen, it's our fundamental responsibility to supplement the efforts of the governments and organizations with our actions. Using a limited amount of water while washing clothes and utensils, brushing teeth and bathing and farming are sone of the steps. To every problem, there is a solution.

ANAMIKA-7A

KALPANA CHAWLA

PERSONAL DATA: Born in Karnal, India Died on February 1, 2003 over the southern United States when Space Shuttle Columbia and her crew perished during entry, 16 minutes prior to schedule landing. Kalpana Chawla enjoyed flying, hiking, back-packing, and reading. She held a Certificated Flight Instructor's license with airplane and glider ratings, Commercial Pilot's licenses for singleand multi-engine land and seaplanes, and Gliders, and instrument rating for airplanes.

EDUCATION: Graduated from Tagore School, Karnal, India, in 1976. She got Bachelor of Science degree in aeronautical engineering from Punjab Engineering College, India, 1982. She got Master of Science degree in aerospace engineering from University of Texas, 1984 and Doctorate of philosophy in aerospace engineering from University of Colorado, 1988.

AWARDS: Posthumously awarded the Congressional Space Medal of Honor, the NASA Space Flight Medal, and the NASA Distinguished Service Medal.

EXPERIENCE: In 1988, Kalpana Chawla started work at NASA Ames Research Center in the area of powered-lift computational fluid dynamics. Her research concentrated on simulation of complex air flows encountered around aircraft such as the Harrier in "ground-effect." Following completion of this project she supported research in mapping of flow solvers to parallel computers, and testing of these solvers by carrying out powered lift computationsShe was responsible for development and implementation of efficient techniques to perform aerodynamic optimization.

NEERAJ RAJBHAR- 7A

kvgccrpf pinjore (hr)
stamp design (com.)
AKAM (29/10/2022)

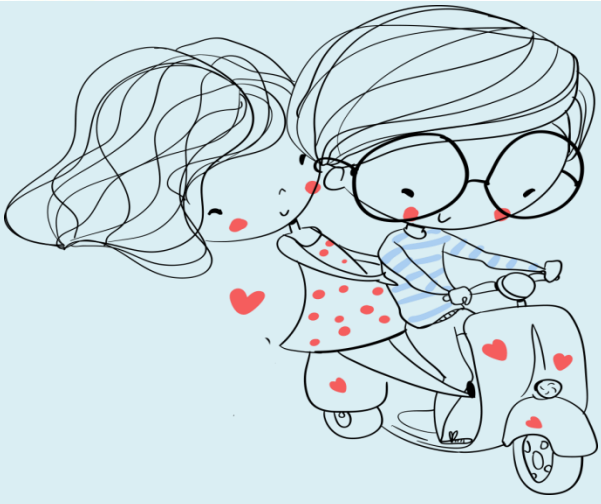

Diwali Celebration
KV Pinjore
2022

संस्कृत

विभाग

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षी विद्यां देहि नमोस्तुते।।

"परोपकार"

प्रस्तावना

परेषाम् उपकारः परोपकारोऽस्ति। अन्येभ्यो मनुष्येभ्यो जीवेभ्यो वा तेषां हितसम्पादनार्थं यत किंचिद् दीयते, तेषां साहाय्यं वा क्रियते, तत् सर्वं परोपकारशब्देन गृह्यते।

परोपकारस्य लाभाः, गुणाः, महत्त्वं च

संसारे परोपकारः एव स गुणो विद्यते, येन मनुष्येषु जीवेषु वा सुखस्य प्रतिष्ठा वर्तते। समाजसेवायाः भावना, देशप्रेमभावना देशभक्तिभावना, दीनोद्धरणभावना, परदुःखकातरता, सहानुभूतिगुणस्य सत्ता च परोपकारगुणस्य ग्रहणेनैव भवति। परोपकारकरणेन हृदयं पवित्रम्, सत्त्वभावसमन्वितं सरल विनयोपेतं सरसं च भवति। परोपकारिणः परेषां दुःखं स्वीयं दुखं मत्वा तन्नाशाय यतन्ते। ते दीनेभ्यो दानं ददति, निर्धनेभ्यो धनम्, वस्त्रहीनेभ्यो वस्त्रम्, पिपासितेभ्यो जलम्, ' बुभुक्षितेभ्योऽन्नम्, अशिक्षितेभ्यश्च शिक्षां ददति। सज्जना : परोपकारेणैव प्रसन्ना भवन्ति। ते परोपकरणे स्वीयं दुःखं न गणयन्ति। उच्यते च –

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां, परोपकारेण न चन्दनेन ॥ १ ॥

प्रकृतिरपि परोपकारस्यैव शिक्षा ददाति। परोपकारार्थमेव सूर्यः तपति, चन्द्रो ज्योत्स्नां वितरति, वृक्षाः फलानि वितरन्ति, नद्यो वहन्ति, मेघाश्च वर्षन्ति। उक्तं च –

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम ॥ २ ॥

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः, नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनोघनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥ ३ ॥

दृष्टान्ताः

शास्त्रेषु परोपकारस्य बहु महत्त्वं गीतमस्ति। परोपकारेणैव जगतोऽभ्युदयो भवति, शान्तिः सुखं च वर्धते। उक्तं च –

अष्टादशपुराणेषु, व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥ ४ ॥

उपसंहारः

परोपकारभावनयैव महाराजो दधीचिः देवानां हिताय स्वीयानि अस्थीति गोनाक्षणार्थं स्वमांसं श्येनाय प्रादात्। महर्षि दयानन्दः, महात्मा गांधिश्च भारतभूमिहितायैव प्राणान् दत्तवन्तौ। अतः सर्वैरपि सर्वदा सर्वथा परोपकार : करणीय :। निगदितं चैतत् –

धनानि जीवितं चैव, परार्थे प्राज्ञउत्सृजेत्।
स निमित्ते वरं त्यागो, विनाशे नियते सति।
परोपकारः कर्तव्यः, प्राणैरपि धनैरपि।
परोपकारजं पुण्यं, न स्यात् क्रतुशतैरपि ॥ ६ ॥

सुभाषितानि

अग्निशेषमृणशेषं शत्रुशेषं तथैव च । पुनः पुनः प्रवर्धेत तस्माच्छेषं न कारयेत् ॥

भावार्थ :
यदि कोई आग, ऋण, या शत्रु अल्प मात्रा अथवा न्यूनतम सीमा तक भी अस्तित्व में बचा रहेगा तो बार बार बढ़ेगा ; अतः इन्हें थोड़ा सा भी बचा नही रहने देना चाहिए । इन तीनों को सम्पूर्ण रूप से समाप्त ही कर डालना चाहिए ।

**नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः ।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेंद्रता ॥**

भावार्थ :
वन्य जीव शेर का राज्याभिषेक (पवित्र जल छिड़काव) तथा कतिपय कर्मकांड के संचालन के माध्यम से ताजपोशी नहीं करते किन्तु वह अपने कौशल से ही कार्यभार और राजत्व को सहजता व सरलता से धारण कर लेता है

**उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति,कार्याणि न मनोरथै।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य,प्रविशन्ति मृगाः॥**

भावार्थ :
प्रयत्न करने से ही कार्य पूर्ण होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं, सोते हुए शेर के मुख में मृग स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं।

**विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यम कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥**

भावार्थ :
विद्वता और राज्य अतुलनीय हैं, राजा को तो अपने राज्य में ही सम्मान मिलता है पर विद्वान का सर्वत्र सम्मान होता है|

दीपावली

अस्माकं भारतवर्ष प्रतिवर्ष बहूनि पाणिमान्यन्ते । तेषु पर्वेषु दीपावालिः हिन्दुनाम पवित्रं पर्वमस्ति । इदम कथ्यते यत् अस्मिन् एव दिने श्रीराम रावणादि राक्षसान् निहत्य सीतया लक्ष्मणेन च सह चतुर्दशवर्षाणां वनवासं समाप्य अयोध्यां प्रत्यागच्छन् । तदा अयोध्यावासिनः प्रसन्नी भूत्वा स्वभूप राजमार्गेषु च दीपकान् प्रज्वालयन् । जन श्रुत्यानुसारेण अस्मिन् एव दिने समुद्रमंथने लक्ष्मी प्रकटिता अभवत् ।

भारतवर्षस्य एकः महान् उत्सवः अस्ति । दीदीपावली इत्युक्ते दीपानाम् आवलिः । अयम् उत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्यायां भवति । कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदशीतः आरभ्य कार्तिकशुद्धद्वितीयापर्यन्तं 5 दिनानि यावत् आचर्यते एतत् पर्व । सायंकाले सर्वे जनाः दीपानां मालाः प्रज्वालयन्ति । दीपानां प्रकाशः अन्धकारम् अपनयति । एतत्पर्वावसरे गृहे , देवालये , आश्रमे , मठे , नदीतीरे , समुद्रतीरे एवं सर्वत्रापि दीपान् ज्वालयन्ति । प्रतिगृहं पुरतः आकाशदीपः प्रज्वाल्यते । दीपानां प्रकाशेन सह स्फोटकानाम् अपि प्रकाशः भवति । पुरुषाः स्त्रियः बालकाः बालिकाः च नूतनानि वस्त्राणि धारयन्ति आपणानां च शोभां द्रष्टुं गच्छन्ति । रात्रौ जनाः लक्ष्मी पूजयन्ति मिष्टान्नानि च भक्षयन्ति । सर्वे जनाः स्वगृहाणि स्वच्छानि कुर्वन्ति , सुधया लिम्पन्ति सुन्दरैः च चित्रैः भूषयन्ति । अस्मिन् दिवसे सर्वेषु विद्यालयेषु कार्यालयेषु च अवकाशः भवति भारतीयाः इमम् उत्सवम् प्रतिवर्षं सोल्लासं समायोजयन्ति । एवं सर्वरीत्या अपि एतत् पर्व दीपमयं भवति । अस्य पर्वणः दीपालिका , दीपोत्सवः , सुखरात्रिः , सुखसुप्तिका , यक्षरात्रिः , कौमुदीमहोत्सवः इत्यादीनि नामानि अपि सन्ति । अस्मिन्नवसरे न केवलं देवेभ्यः अपि तु मनुष्येभ्यः प्राणिभ्यः अपि दीपारतिं कुर्वन्ति ।

लोकहितं मम करणीयम्

मनसा सततं स्मरणीयम्
वचसा सततं वदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥

न भोग भवने रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥

न जातु दुःखम् गणनीयम्
न च निज सौख्यं मननीयम्
कार्य क्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥

दुःख सागरे तरणीयम्
कष्ट पर्वते चरणीयम्
विपत्ति विपिने भ्रमणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धु जना ये स्थिता गह्वरे
तत्र मया सन्चरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं हदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे।।

त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः।।

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः।।

पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत।।

"सत्संगतिः"

सज्जनानां संगतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते । मानवः एकः सामाजिक प्राणी अस्ति, अनेनैव सः एकलः स्थातुं न शक्यते । सत्यं तु एतत् संसारे नैव कोऽपि प्राणी संसर्गेण विना भवितुं स्थातुं वा न शक्यते । न केवलं एतावत् वनस्पतयोऽपि संसर्गेण एव सुखिनः भवन्ति । एका लता वृक्षेण विना स्व जीवनं सम्यक् रूपेण जीवितुं न शक्यते, सा वृक्षस्य अवलम्बं गृह्णाति एव ।
पशुपक्षिणश्च स्व मित्रैः सह उषित्वा एव प्रसन्नाः भवन्ति । वनवासी मृगः मृगीं विना व्याकुलो भवति । एवमेव चक्रवाकोऽपि चक्रवाकीं विना स्थातुं न शक्नोति ।

कथनस्य तात्पर्यमिदं यत् संसारेऽस्मिन् नैव कोऽपि जीवः एकलः स्व जीवनं धारयितुं शक्यते । सः यत्र कुत्रापि तिष्ठति, उत्तिष्ठति, खादति, पिबति, स्वपिति आनन्दञ्च अनुभवति तस्य वातावरणस्य प्रभावः तस्योपरि भवति एव, नैव अत्र काऽपि विप्रतिपत्तिः दृश्यते ।

जनः यादृश्यां संगतौ वसति तादृश एव प्रभावः तस्मिन् दरीदृश्यते । यदि सः दुष्टैः जनैः सह वसति, तर्हि दुष्टो भवति, यदि वा सज्जनानां सङ्गतौ वसति, तर्हि सज्जनो भवति । अनेनैव कथ्यते –

"संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति"

प्राचीनकाले वाल्मीकिः नाम ऋषिः स्वस्थ जीवनस्य प्रारम्भिके काले दस्युः आसीत्, सत्सङ्गत्या एव मुनिः सञ्जतः तदनन्तरञ्च महाकविः रामायणं नाम महाकाव्यं विरचितं तेन ।

सत्सङ्गत्या एव 'कबीर' नामकः जनः निरक्षरोऽपि सन्तसमाजे प्रतिष्ठासम्पन्नः सञ्जतः अनेकशः जनः विद्वान् भवति, किन्तु तस्य कार्यकलापानि दुष्टानि भवन्ति । ईदृशानां जनानां संगतिः कदापि न विधेया । कथितञ्च

-दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः । ।

संसारेऽस्मिन् यदि जनः सुखी भवितुं वाञ्छति, तर्हि तेन सदैव सज्जनानां सङ्गतिः विधेया । दुष्टेभ्यः सदैव दूरीभूयात् दुष्टानां सङ्गतिः कज्जलवत् भवति, यत्र गमने मलिनता अवश्यमेव भवति एवमेव दुष्टानां संगत्या जनस्य चरित्रमपि मलिनं भवत्येव ।
सुसंस्कारैः जनः विलम्बात् प्रभावितो भवति, दुःसंस्कारैश्च सः शीघ्रमेव प्रभवति । अतः अस्माभिः सदैव सत्सङ्गतिः विधेया स्व मित्राणि पारिवारिकान् सदस्यान् च सदैव दुष्टसंगात् अवरोद्धव्यम् ।

सत्सङ्गतिस्तु वस्तुतः गुणनिधाना वर्तते । यदि जनः श्रेष्ठजनसंसर्गे वसति नैव तं जनं कस्यापि शिक्षकस्य कदापि आवश्यकता भवति । कुत्रापि च विद्याध्ययनस्य अनिवार्यता न कुतः तस्मिन् स्वयमेव ते सर्वे गुणाः प्रविशन्ति येन सह सः वसति । अतएव केनापि कविना कथितम्

जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति, पापमपाकरोति । चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति, सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥ अपि च-

सद्भिरेव सहासीत्, सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवाद मैत्रींच, नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥

अतः अस्माभिः सदैव सत्सङ्गतिः विधेया ।

छात्र-प्रतिज्ञा संस्कृतभाषायाम्

भारतं अस्माकं देश:। वयं सर्वे भारतीया: भ्रातरः भगिन्यः च। अस्माकं मातृभूमि: प्राणेभ्योऽपि प्रियतरा अस्ति। अस्या: समृद्धौ विविध-संस्कृतौ च अस्माकं गर्वः अस्ति। वयं अस्या: सुयोग्याः अधिकारिणः भवितुं सदा प्रयत्नं करिष्याम:। वयं स्वमातापित्रो: शिक्षकाणां गुरुजनानां च आदरं करिष्याम: सर्वैः च सह शिष्टतया व्यवहारं करिष्याम:। वयं स्वदेशं देशवासिनं च प्रति कृतज्ञतया वर्तितुं प्रतिज्ञां कुर्म:। तेषां कल्याणे समृद्धौ च न: सुखं निहितम् अस्ति।
जयतु भारतम्।

ICT

SECTION

“INFINITE OPPORTUNITIES FOR ALL”

CYBER SECURITY DOS AND DON'TS

DO use hard-to-guess passwords or passphrases. A password should have a minimum of 10 characters using uppercase letters, lowercase letters, numbers, and special characters

DO keep your passwords or passphrases confidential. DON'T share them with others or write them down. You are responsible for all activities associated with your credentials.

DON'T leave sensitive information lying around the office. DON'T leave printouts or portable media containing private information on your desk. Lock them in a drawer to reduce the risk of unauthorized disclosure.

DON'T post any private or sensitive information, such as credit card numbers, passwords or other private information, on public sites, including social media sites, and DON'T send it through email unless authorized to do so. DO use privacy settings on social media sites to restrict access to your personal information.

DO pay attention to phishing traps in email and watch for telltale signs of a scam. DON'T open mail or attachments from an untrusted source. If you receive a suspicious email, the best thing to do is to delete the message

DON'T click on links from an unknown or untrusted source. Cyber attackers often use them to trick you into visiting malicious sites and downloading malware that can be used to steal data and damage networks.

DON'T be tricked into giving away confidential information. It's easy for an unauthorized person to call and pretend to be an employee or business partner. DON'T respond to phone calls or emails requesting confidential data.

DO destroy information properly when it is no longer needed. Place paper in designated confidential destruction bins throughout the office or use a crosscut shredder. For all electronic storage media, consult with your Managed IT Services provider.

DO be aware of your surroundings when printing, copying, faxing or discussing sensitive information. Pick up information from printers, copiers, or faxes in a timely manner.

DON'T install unauthorized programs on your work computer. Malicious applications often pose as legitimate software.

DON'T plug in portable devices without permission from your agency management. These devices may be compromised with code just waiting to launch as soon as you plug them into a computer.

DO lock your computer and mobile phone when not in use. This protects data from unauthorized access and use.

DON'T leave devices unattended. Keep all mobile devices, such as laptops and cell phones physically secured. If a device is lost or stolen, report it immediately to your manager and ISO/designated security representative.

DO remember that wireless is inherently insecure. Avoid using public Wi-Fi hotspots. When you must, use agency provided virtual private network software to protect the data and the device.

DON'T leave wireless or Bluetooth turned on when not in use. Only do so when planning to use and only in a safe environment.

RAJANI ARORA – PGT COMPUTER SCIENCE

COMPUTER LAB CODE OF CONDUCT

Do's

- Students must use the computer lab for academic related activities
- Students must inform the incharge Lecturer of any observed hardware or
- Software failures.
- Students must keep their work area clean and orderly.
- Students must properly reference all material found on the Internet.
- Students must regularly clean their systems by cleaning unnecessary data.

Don'ts

- Students must not disrupt, or trouble the other students in the lab.
- Students must not interfere or tamper anyone else's work or computer.
- Students must not access any computer or data without permission.
- Students must not use pen drives to avoid transfer of virus.
- Students must not use the computers for games, email, chat rooms or Shopping.
- Students must not plagiarize material from the Internet or other resources.
- Students must not use or copy any unauthorized software or data or submit other academic work for their projects.
- Students must not have food or eatables inside the lab.
- Students must not access inappropriate material from the Internet.

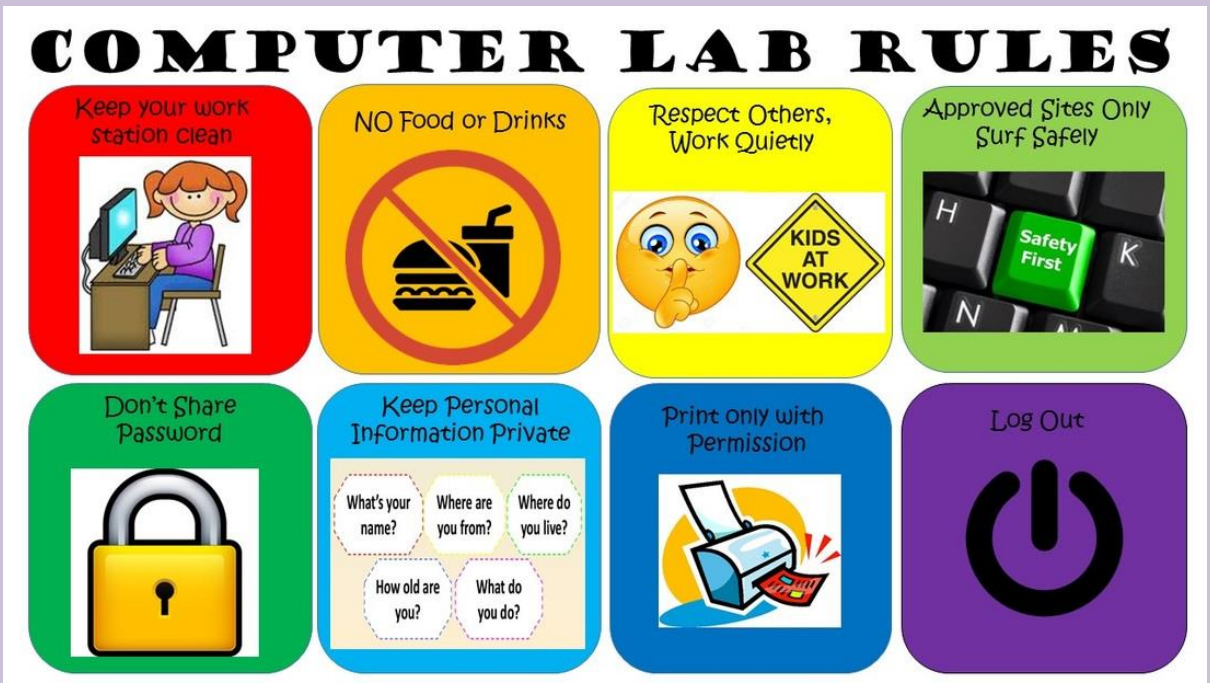

RAVIKANT- Computer Instructor

MATHS

SECTION

Vedic Mathematics

Vedic Mathematics is a collection of sutras or techniques that solves mathematical equations quickly and effectively. It is composed of 16 Sutras/Formulae, 13 Sub-sutras which can be used to solve problems in calculus.

History of Vedic Mathematics

This methodology of mathematics was reintroduced from the Vedas between 1911 and 1918 by Sri Bharati Krishna Tirthaji. He's regarded as the father of Vedic Maths. According to him, Vedic mathematics is founded on 16 Sutras or formulas. These equations are designed to represent how the mind naturally operates, and are thus intended to be of considerable assistance in pointing the learner to the suitable technique of solution.
Some examples are following-

Ekadhikina Purvena

[Implying "One plus the previous one"]

This Sutra is used if the sum of the unit digits of the two numbers equals 10.
Example: Q: 33 x 37
The sum of the unit digits of both numbers (3+7) is 10. So, the sutra can be utilized here. (first, digit x one more than the first) (Unit digit of 1st number x Unit digit of the 2nd number)
(3 x 4) (3 x 7) = 1221

Urdhva-Tiryagbyham

[Implying "Vertically & crosswise"]

This sutra is used for multiplication and the formula is — ab x cd = (ac) (ad + bc) (bd)

Example:
Q: 14 x 12
(1 x 1) ((1 x 2) + (4 x 1)) (4 x 2)
1 6 8
You got your answer. It's 168.

Yaavadunam

[Implying "Whatever the degree of its deficiency"]

This is used to identify squares of numerals that are near base-10 powers. Find the shortfall or excess by comparing the number to the base.
One element of the answer is to square the difference, which forms the unit part of the solution; another part is to reduce or raise the given number by the difference it has to the power of base 10. Add if it's excess, less if it's a deficit.

Example: Let's find 13^2
Step 1 – 13 is close to 10. The excess over the base is 3.
Step 2 – Square of the excess is 3 x 3 = 9. This is the unit part of the answer.
Step 3 – 13 + 3 = 16
Solution is 169

Famous Indian Mathematicians and their Inventions

Here are some of the great mathematicians of India and their inventions:

Mathematicians	**Renowned Works and Inventions**
Aryabhata	Formula: (a + b) 2 = a2 + b2 + 2ab
Brahmagupta	Introduction of zero (0)
Srinivasa Ramanujan	Properties of the Partition Function
P.C. Mahalanobis	Mahalanobis Distance
C.R. Rao	Theory of Estimation
D.R. Kaprekar	Devlali numbers, Kaprekar numbers, the Harshad numbers and Demlo numbers.
Harish Chandra	Representation theory, Harmonic analysis on semisimple Lie groups.
Satyendra Nath Bose	Collaboration with Albert Einstein, Modern theoretical physics in India.
Bhaskara	Declared that any number divided by zero is infinity and that the sum of any number and infinity is also infinity.
Narendra Karmarkar	Karmarkar's algorithm

ग्रीन स्कूल कार्यक्रम प्रमाण पत्र वितरण

बेस्ट आउट ऑफ़ वेस्ट पर्दर्शनी

फिट इंडिया गतिविधियाँ

पर्यावरण दिवस पौधारोपण कार्यक्रम

विधालय में तेलंगाना दिवस आयोजन

खिलौना आधारित शिक्षण वर्कशॉप

हर घर तिरंगा महोत्सव झलकियाँ

विद्यालय में खेल दिवस का आयोजन

सायबर जागरूकता दिवस

अन्तराष्ट्रीय शांति दिवस शपथ

दीया सजाओ प्रतियोगिता आयोजन

हिंदी पखवाड़ा वाद - विवाद प्रतियोगिता

खिलौना आधारित शिक्षण कार्यशाला

पोषण माह – पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

स्कूल में शब्द अंताक्षरी का आयोजन

स्वच्छता पखवाड़ा गतिविधियाँ

STAFF PHOTOGRAPH

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

धन्यवाद...